भाषाविज्ञान : 4

प्रयोजनमूलक हिंदी

आन लाइन अध्यापन / भ्रम निवारण समय

प्रातः 8-00 बजे से 9-30 भाषाशास्त्र एवं

सायं 5-30 बजे से 7-00 हिंदी साहित्य का इतिहास

ZOOM ID - 261-891-6758 / मोबाईल नं. 9473030984

संशोधन अपेक्षित है

इंटर से स्नातकोत्तर एवं हिंदी भाषा एवं साहित्य के - यूजीसी एवं सिविल सर्विसेज के अखिल भारतीय परीक्षार्थी / प्रतियोगी (सबके लिए उपलब्ध)

डा.शिवचन्द्र सिंह

प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष हिंदी

रामेश्वरदास पन्नालाल महिला महाविद्यालय, पटना सिटी

पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना

6.अनुवाद

'अनुवाद' शब्द का सरल एवं स्वीकृत अर्थ है, एक भाषा की विचार सामग्री को दूसरी भाषा में पहुँचाना।

'विचारों को एक भाषा से दूसरी भाषा में रूपान्तरित करना अनुवाद है।'

अनुवाद के लिए हिंदी में 'उल्था' का, अँग्रेजी में Translation भाषान्तर (संस्कृत, कन्नड़, मराठी) तर्जुमा (कश्मीरी, सिंधी, उर्दू, विवर्तन, तर्जुमा (मलयालम), मोषिये चण्र्यु (तमिल), अनुवादम् (तेलुगु), अनुवाद (संस्कृत, हिंदी, असमिया, बांग्ला, कन्नड़, उड़िया, गुजराती, पंजाबी, सिंधी)।

अनुवाद के दो पक्ष स्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा

स्रोतभाषा या मूल भाषा- मूलग्रंथ/रचना की भाषा

लक्ष्य भाषा- जिस भाषा में अनुवाद किया जाता है

जैसे प्रेमचंद के उपन्यास गोदान का विश्व की अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ है तब यहाँ गोदान की भाषा को स्रोत भाषा कहेंगे और शेष जिन भाषाओं में अनुवाद हुआ है, उस अनुवाद की भाषा लक्ष्य भाषा कहलायेगी।

अनुवाद के प्रकार

1-शब्दानुवाद 2.भावानुवाद 3.छायानुवाद

4. रूपांतरण 5. सारानुवाद 6.व्याख्यानुवाद

7. वार्ता अनुवाद या आशु अनुवाद **8. मशीनी अनुवाद**

अनन्तर.....

शब्दानुवाद

स्रोतभाषा के प्रत्येक शब्द का लक्ष्यभाषा के प्रत्येक शब्द में यथावत् अनुवाद को शब्दानुवाद कहते हैं। शब्दानुवाद सबसे निकृष्ट कोटि का अनुवाद जाता है। प्रत्येक भाषा की प्रकृति अन्य भाषा से भिन्न होती है और हर भाषा में शब्द के अनेकानेक अर्थ विद्यमान रहते हैं। इसीलिए मूल भाषा की हर शब्दाभिव्यक्ति को लक्ष्यभाषा में यथावत् अनूदित कर देने के अक्सर हास्यास्पद स्थिति उत्पन्न हो जाती है। स्रोतभाषा और लक्ष्यभाषा में अर्थ, प्रयोग, वाक्य-विन्यास और शैली की समानता रहने पर ही शब्दानुवाद सही और सार्थक होता है, यंत्रवत् किया गया शब्दानुवाद अबोधगम्य, हास्यास्पद एवं कृत्रिम हो जाता है। जैसे-

भावानुवाद

भावानुवाद में स्रोत-भाषा के शब्द, पदक्रम और वाक्य-विन्यास पर ध्यान न देकर अनुवादक मूलभाषा की विचार-सामग्री या भावधारा पर अपने आपको केंद्रित करता है। ऐसे अनुवादों में स्रोतभाषा में व्यक्त भाव-सामग्री को उपस्थित करना ही अनुवादक का लक्ष्य होता है।

भावानुवाद की प्रक्रिया में कभी-कभी मूल रचना जैसा मौलिक वैभव आ जाता है, लेकिन स्रोत भाषा के जानकार पाठकों की यह भी शिकायत रहती है कि अनुवादक ने मूलभाषा की भावधारा को समझे बिना, लक्ष्य-भाषा की प्रकृति के अनुरूप भाव सामग्री प्रस्तुत कर दी है। जब पाठक किसी रचना को रचनाकार के अभिव्यक्ति-कौशल की दृष्टि से पढ़ना चाहता है तो भावानुवाद उसकी लक्ष्य सिद्धि में बाधक बनता है।

अनन्तर.....

छायानुवाद

छायानुवाद की प्रविधि के अंतर्गत अनुवादक न शब्दानुवाद की तरह केवल मूल शब्दों का अनुसरण करता है और न सिर्फ भावों का ही परिपालन करता है, बल्कि मूलभाषा से पूरी तरह बँधा हुआ उसकी छाया में लक्ष्यभाषा में वर्ण्य-विषय की प्रस्तुति करता है। संस्कृत नाटकों में लगातार ऐसे प्रयोग मिलते हैं कि उनकी स्त्री पात्र तथा सेवक, दासी आदि जिस प्राकृत भाषा का प्रयोग करते हैं, उसकी संस्कृत छाया भी नाटक में विद्यमान रहती है। ऐसे ही प्रयोगों से छायानुवाद का उद्भव हुआ है।

सारानुवाद

सारानुवाद में मूलभाषा की सामग्री का सागर्भित और संक्षिप्त अनुवाद लक्ष्यभाषा प्रस्तुत में किया जाता है। लंबे भाषणों और वाद-विवादों के अनुवाद प्रस्तुत करने में यह विधि सहायक होती है।

व्याख्यानुवाद

व्याख्यानुवाद में मूलभाषा की सामग्री का लक्ष्यभाषा में व्याख्या सहित अनुवाद उपस्थित किया जाता है। इसमें अनुवादक अपने अध्ययन और दृष्टिकोण के अनुरूप स्रोतभाषा की सामग्री की व्याख्या अपेक्षित प्रमाणों और उदाहरणों आदि के साथ करता है। लोकमान्य तिलक ने 'गीता' का अनुवाद इसी शैली में किया है। संस्कृत के भाष्यकारों और हिंदी के टीकाकारों ने व्याख्यानुवाद की शैली ही अपनाई है। स्वभावतः व्याख्यानुवाद अथवा भाष्यानुवाद मूल से बड़ा हो जाता है और कई स्तरों पर तो पूर्णतः मौलिक बन जाता है। जैसे पाणिनि की अष्टाध्यायी का भाष्य जो महाभाष्य के नाम से ख्यात् है, मूल से भी अधिक प्रभावशाली बन पड़ा है।

अनन्तर.....

आशु अनुवाद

अनुवादक दुभाषिये की भूमिका में काम करता है, वहाँ वह केवल आशु अनुवाद कर पाता है। दो दूरस्थ देशों के भिन्न भाषा-भाषी जब आपस में बातें करते हैं तो उनके बीच दुभाषिया संवाद का माध्यम बनता है। ऐसे अवसरों पर वे अनुवाद शब्द और भाव की सीमाओं को तोड़कर अनुवादक की सत्वर अनुवाद क्षमता पर आधारित हो जाता है। उसके पास इतना समय नहीं होता है कि शब्द के सही भाषायी पर्याय के बारे में सोचे अथवा कोशों की सहायता ले सके। कई बार ऐसे दुभाषिये के आशु अनुवाद के कारण दो देशों में तनाव की स्थिति भी बन जाती है। आशु अनुवाद ही अब भाषांतरण के रूप में प्रचलित है।

रूपांतरण

अनुवाद के इस प्रभेद में अनुवादक मूलभाषा से लक्ष्यभाषा में केवल शब्द और भाव का अनुवाद नहीं करता, अपितु अपनी प्रतिभा और सुविधा के अनुसार मूल रचना का पूरी तरह रूपांतरण कर डालता है। विलियम शेक्सपीयर के प्रसिद्ध नाटक 'मर्चेन्ट आफ वेनिस' का अनुवाद भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 'दुर्लभ बन्धु' अर्थात् 'वंशपुर का महाजन' नाम से किया है जो रूपांतरण के अनुवाद का उत्कृष्ट उदाहरण है। मूल नाटक के एंटोनियो, बैसोनियो, पोर्शिया, शाइलाक जैसे नामों को भारतेन्दु ने क्रमशः अनंत, बसंत, पुरश्री, शैलाक्ष जैसे रूपांतरित नाम दिये हैं। ऐसे रूपांतरण में अनुवाद की मौलिकता सबसे अधिक उभरकर सामने आती है।

अनन्तर.....

मशीनी अनुवाद

कम्प्यूटर और साफ्टवेयर की क्षमताओं में अत्यधिक विकास के कारण आजकल अनेक भाषाओं का दूसरी भाषाओं में मशीनी अनुवाद सम्भव हो गया है। यद्यपि इन अनुवादों की गुणवता अभी भी संतोषप्रद नहीं कही जा सकती तथापि अपने इस रूप में भी यह मशीनी अनुवाद कई अर्थों में और अनेक दृष्टियों से बहुत उपयोगी सिद्ध हो रहा है। जहाँ कोई चारा न हो, वहाँ मशीनी अनुवाद से कुछ न कुछ अर्थ तो समझ में आ ही जाता है। मशीनी अनुवाद की दिशा में आने वाले दिनों में काफी प्रगति होने वाली है। मशीनी अनुवाद के कारण दुनिया में एक नयी क्रान्ति आ रही है।

कंप्यूटर, साफ्टवेयर, इंटरनेट और इससे संबंधित प्रौद्योगिकी के विकास और विस्तार के कारण अब अनुवाद की पारंपरिक पद्धति में कई बड़े परिवर्तन हुए हैं। अब अनुवाद का कार्य मुख्यतः कागज और कलम से नहीं, बल्कि कंप्यूटर की सहायता से किया जाने लगा है। पारंपरिक शब्दकोशों का स्थान अब आनलाइन शब्दकोश ले रहे हैं, कंप्यूटर एसिस्टेड ट्रांसलेशन (CAT) साधनों या साफ्टवेयरों का उपयोग भी होने लगा है। निश्चित रूप से, पारंपरिक साधनों व पद्धियों की तुलना में इनके अपने लाभ हैं, किन्तु साथ ही इनसे जुड़ी कुछ तकनीकी चुनौतियाँ भी हैं, जो पारंपरिक अनुवाद पद्धति में नहीं थी।

कंप्यूटर एसिस्टेड ट्रांसलेशन (CAT) टूल्स की बात आती है, तो कई लोग इसे 'मशीन ट्रांसलेशन' भी समझ लेते हैं। उनकी धारणा होती है कि CAT टूल्स अर्थात ऐसे साधन हैं, जिनसे कंप्यूटर या किसी वेबसाइट पर अपनी पाठ्य-सामग्री डालते ही दूसरी भाषा में तुरंत अनुवाद उपलब्ध हो जाएगा और इसमें मानवीय बुद्धि या वास्तविक अनुवाद की आवश्यकता ही नहीं है। जबकि सच्चाई यह है कि CAT टूल्स और मशीन ट्रांसलेशन दो अलग बातें हैं।

अनन्तर.....

वार्ता अनुवाद या आशु अनुवाद

दो विभिन्न भाषा-भाषी एक दूसरे की भाषा से अनभिज्ञ होने के बावजूद एक दूसरे से अपने-अपने प्रयोजन सिद्ध करने के निमित्त परस्पर वार्ता करने के लिए एक साथ बैठते हैं तो ऐसी स्थिति में उनके बीच जो व्यक्ति दोनों भाषाओं का माध्यम बनता है, उसे दुभाषिया (इंटरप्रेटर) कहते हैं। यही दुभाषिया व्यक्ति एक पक्ष की बात सुनता है और उसके बाद दूसरे पक्ष के व्यक्ति की भाषा में अनुवाद करके बोलता है फिर दूसरे पक्ष का व्यक्ति अपनी भाषा में उत्तर देता है।

उस उत्तर को दुभाषिया पहले पक्ष के व्यक्ति की भाषा में तत्काल अनुवाद कर उसे बताता है। इस प्रकार एक दूसरे की भाषा से अनभिज्ञ व्यक्ति भी दुभाषिये के माध्यम से वार्ता करने में सफल होते हैं। दुभाषिया तत्काल अनुवाद करता है, यह अनुवाद मौखिक होता है और शीघ्रता में होता है, इसलिए इस मौखिक अनुवाद को आशु अनुवाद एवं विभिन्न भाषा-भाषियों के बीच वार्ता के लिए होता है, इसलिए वार्तानुवाद कहा जाता है।

आधुनिक युग में राजनीतिक, सामाजिक सांस्कृतिक आदान-प्रदान के कारण पूरे विश्व में आशु अनुवाद का विशेष महत्त्व है। इसके विशेष महत्त्व के कारण दुभाषिया की भी जिम्मेदारी बढ़ जाती है।

दो महत्त्वपूर्ण व्यक्ति अति महत्त्वपूर्ण विषय पर वार्ता के लिए बैठते हैं तो वार्ता की सफलता दुभाषिये की क्षमता पर भी निर्भर करती है। दुभाषिये की सत्वर प्रतिभा पर ही वार्ता की सफलता निर्भर करती है । इसलिए उसे दोनों भाषाओं के सूक्ष्मतम ज्ञान के साथ उन भाषाओं के सामाजिक तथा सांस्कृतिक प्रवृतियों की अच्छी जानकारी रखनी पड़ती है ताकि वार्ताकारों के बीच उनके विचारों और भावों को कुशलतापूर्वक संप्रेषित करके वार्ता को सफल बनाने में सहयोग दे सके।

अनन्तर.....

अनुवाद की चुनौतियाँ

अनुवाद संबंधी चुनौतियों को मोटे तौर पर दो श्रेणियों में बाँट सकते हैं:

1,भाषायी चुनौतियाँ व 2. तकनीकी चुनौतियाँ

भाषायी चुनौतियाँ

भाषा का उद्देश्य संवाद स्थापित करना है। यदि वही विफल हो जाए तो भाषा अनुपयोगी हो जाएगी। एक अच्छे अनुवादक के लिए यह आवश्यक है कि वह जिन दो भाषाओं में अनुवाद करता है, उन दोनों भाषाओं को बोलने वाले लोगों की संस्कृति, इतिहास और मान्यताओं आदि से भी वह परिचित हो। यदि अनुवादक उन दोनों भाषाओं में निपुण नहीं है, तो इस बात की अत्यधिक संभावना है कि वह अभीष्ट संदेश को अपने अनुवाद के माध्यम से व्यक्त कर पाने में सफल नहीं हो सकेगा।

तकनीकी चुनौतियाँ

अनुवाद के क्षेत्र की चुनौतियों में एक महत्त्पूर्ण पहलू तकनीकी चुनौतियों से संबंधित है। कंप्यूटर, साफ्टवेयर, इंटरनेट और इससे संबंधित प्रौद्योगिकी के विकास और विस्तार के कारण अब अनुवाद की पारंपरिक पद्धति में कई बड़े परिवर्तन हुए हैं।

कंप्यूटर एसिस्टेड ट्रांसलेशन जिनसे कंप्यूटर या किसी वेबसाइट पर अपनी पाठ्य-सामग्री डालते ही दूसरी भाषा में तुरंत अनुवाद उपलब्ध हो जाता है, शब्दशः अनुवाद मिल जाता है, जिसका अन्वय करना पड़ता है, जो काफी दुष्कर होता है, बावजूद भाव को समझ सकते हैं, इसमें अभी पर्याप्त कार्य करने की आवश्यकता है

अनन्तर.....

7. विज्ञान, तकनीकी एवं संचार की भाषा

1. विश्वव्यापी विकसित विज्ञान, तकनीकी एवं संचार की भाषा को जन सामान्य के लिए प्रयोगग्राह्य बनाने का प्रयास,

2. विश्वव्यापी वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुसंधानों को देशहित में देशवासियों के लिए सुलभ बनाना

3. श्रव्य-दृश्य एवं प्रिंट मीडिया के लिए संपादकीय, समाचार संग्रहण, समाचार वाचन एडिटिंग, प्रूफ रीडिंग का ज्ञान प्रदान करना

8.संक्षेपण, टिप्पण एवं प्रारुपण

कार्यालयों में विभिन्न संचिकाओं पर कार्यालय सहायक/कार्याधिकारी द्वारा आवेदनों आदि पर ध्यान आकर्षित करने के लिए संक्षिप्त आलेखन

9. प्रेस विज्ञप्ति

विभिन्न कार्यालयों, संस्थाओं द्वारा सांस्थानिक सूचना/निविदा आदि की खबर प्रचारित-प्रसारित करने के लिए मीडिया को देने के लिए प्रेस विज्ञप्ति, प्रेस वार्ता, निविदा आदि के प्रारूप का ज्ञान प्रदान करने के निमित्त

10. विज्ञापन

विज्ञापन जनसंपर्क माध्यम का एकमात्र ऐसा शक्तिशाली साधन है जिसके माध्यम से उत्पादित वस्तु के बारे में प्रभावी सूचना द्वारा उपभोक्ता के मन में विश्वास पैदा कर उसके क्रय हेतु उन्हें व्यापक पैमाने पर प्रेरित किया जाता है।

विज्ञापन के अंतर्गत उत्पाद के प्रचारार्थ प्रयुक्त होने वाले विज्ञापनों के लेखन का ज्ञान प्रदान किया जाना

विज्ञापन के उद्देश्य एवं कार्यः

1. नव उत्पादित वस्तुओं या सेवाओं की सूचना या परिचय देना,
2. उस वस्तु या सेवा की गुणवत्ता, उपयोगिता और श्रेष्ठता को प्रकाश में लाकर जनसामान्य का ध्यान आकृष्ट करना,
3. जनसामान्य या उपभोक्ता का उस वस्तु की गुणवत्ता और उपयोगिता इत्यादि के प्रति विश्वस्त करना,
4. सम्बद्ध वस्तु या सेवा की मांग या बिक्री बढ़ाना,
5. उपभोक्ताओं को सम्बद्ध वस्तु के उपयोग के लिए बार-बार स्मरण दिलाकर उसके लिए प्रेरित करना,
6. बिचैलियों को उस वस्तु या सेवा की बिक्री या अपनाने के लिए प्रेरित करना।

अनन्तर.....

विज्ञापन के प्रकार

डा. दांगल झाल्टे ने व्यापार, उत्पादन सेवा, व्यवसाय इत्यादि की प्रकृति एवं आवश्यकता के अनुरूप विज्ञापनों के पांच प्रकार बताए हैं।

1. अनुनेय, 2. सूचनाप्रद, 3. सांस्थानिक, 4. औद्योगिक, 5. वित्तीय एवं वर्गीकृत।

डा. विनोद गोदरे ने स्थूल रूप से विज्ञापन के चार प्रकारों की चर्चा की है-

1. लिखित अथवा मुद्रितः इसके अंतर्गत पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित विज्ञापन आते हैं।

2. मौखिक- इसके अंतर्गत मौखिक रूप से उच्चरित विज्ञापन आते हैं।

3. दृश्य-श्रव्य- इसके अंतर्गत दूरदर्शन, फिल्म, सलाइड इत्यादि के माध्यम से दिखलाए जाने वाले विज्ञापन आते हैं।

4. इतर-उपर्युक्त प्रकारों से अलग प्रकार के विज्ञापन इसी वर्ग में आते हैं, यथा सैंडविच बोर्ड, सेल इत्यादि

अनन्तर.....

विज्ञापन की प्रमुख विशेषतायें

1. उपभोक्ताओं के ध्यान आकर्षण की शक्ति,
2. उत्पादित वस्तु के बारे में सूचना या जानकारी देना,
3. वस्तु के बारे में उपभोक्ताओं के मन में विश्वास निर्माण करना,
4. उपभोक्ताओं की सुप्त इच्छाओं को जागृत करना,
5. उपभोक्ताओं को वस्तु के क्रय से संबंधित निर्णय लेने में सहायक होना,
6. उत्पादित वस्तु की सर्वश्रेष्ठता या अथवायीता दर्शाना या सिद्ध करना,
7. उत्पादित वस्तु के बारे में तकनीकी या अन्य आवश्यक जानकारी देना तथा उसकी आवश्यकता या उपयोगिता उपभोक्ता को बताना।

अनन्तर.....

सक्षम और एवं सफल विज्ञापन के लिए आवश्यक गुण

1. आकर्षक मूल्य(**Attention value**)
2. सुपाठ्यता एवं श्रवणीयता(**Readality and Listenability**)
3. स्मरणीय (**Memorability**)
4. विक्रय की शक्ति(**Selling power**)

11. व्यावसायिक हिंदी

विभिन्न व्यवसायों में प्रयुक्त होनेवाले शब्दों का संग्रहण एवं प्रसार में प्रयुक्त होनेवाली भाषा का ज्ञान प्रदान करना